IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद पीलीभीत में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा-7 के बालिकाओं की पोषणात्मक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

Smita Lodhi,Mahendra Kumar singh
Lecturer, Deputy Director of Education
District Institute of Education and Training

सारांश

शिक्षा हमारे जीवन का मूल आधार है। पोषण जीवन के लिये आतश्यक है। अच्छा पोपण हमें स्वस्थ शरीर प्रदान करता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क वास होता है। जब पोषण द्वारा हमारा शरीर स्वस्थ होता है तब ही हम अपने सभी कार्य सही से कर पाते है। प्रस्तुत शोध हेतु कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं की पोषणात्मक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध हेतु प्रयुक्त न्यादर्श के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा जनपद पीलीभीत के 8 विकास क्षेत्रो के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयो एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन याद्दच्छिक गुच्छ न्यादर्श विधि से किया गया। उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयो में स्तरीकृत सम्भाव्य विधि द्वारा 100-100 विद्यार्थियो का याद्दच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। गणना के आधार पर प्राप्त किये गये परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की पोषणात्मक स्थिति में सार्थक अंतर पाया गया।

कूट शब्दावली :- पोषण, जागरूकता, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय।

प्रस्तावना :-

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिये आवश्यक है, जिससे नागरिक विकास के पथ पर अग्रसर होता है। कोई भी राष्ट्र तब ही आगे बढ़ेगा जब उस देश के नागरिक स्वस्थ होगें। देश के बच्चे राष्ट्र के भविष्य होते है। मानव जाति के लिए

आहार का संबंध उसके अस्तित्व के साथ होता है। आहार एवं पोषण के बिना उसके भौतिक अस्तित्व को बनाएं रखना असंभव है। अतः मानव के अस्तित्व का मौलिक भाग आहार है। आहार का उपयोग न केवल शारीरिक अस्तित्व को बनाएं रखने के लिये किया जाता है बल्कि प्यार, मित्रता और सामाजिक स्वीकृति के रूप में उसका उपयोग होता है तथा जीवन में सौभाग्य के प्रतीक के रूप में। जैसे- परीक्षा में उत्तीर्ण होना, नौकरी मिलना, शिशु का जन्म होना, गृह प्रवेश आदि तथा सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक समारोह में होता है।

आज हम लोग यह अनुभव कर रहे है कि बच्चों व स्कूल जाने वाले छात्र /छात्राओं को कैसा आहार दे ताकि वह स्वस्थ रहे तथा अपनी ऊर्जा का वैयक्तिक और सामाजिक विकास में पूर्णता उपयोग कर सकें।

पिछले 100 वर्षों में पोषण का जो वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है उससे यह पता चलता है कि यह समस्या कितनी जटिल है। इस जटिल स्थिति को सरल बनाना एक सामाजिक आवश्यकता बन गई है।

भारत में अनेक आहारी और चिकित्सालयी सर्वेक्षणो से यह ज्ञात हुआ कि आहार एवं पोषण की सही जानकारी न होने के कारण कुपोषण की स्थिति व्याप्त है। भारतीय संदर्भ में पोषण शिक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि इस देश में कुपोषण की समस्या मुख्यतः अज्ञानता, गरीबी एवं अशिक्षा है।

स्वस्थ रहने के लिये सभी को उचित पोषण की आवश्यकता होती है उचित पोषण संतुलित आहार से प्राप्त होता है। "संतुलित आहार अर्थात ऐसा आहार जिससे शरीर की आवश्यकता के अनुसार उचित मात्रा में कार्बोडड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज लवण एवं विटामिन है। जिससे शरीर को काम करने की शक्ति तथा शरीर निर्माण और सुरक्षात्मक तत्व प्राप्त होते है। जिस व्यक्ति को सदैव संतुलित आहार मिलता है वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सुपोषित रहता है उसकी कार्यक्षमता भी अधिक रहती है। जो भी भोजन हम खा रहे है उसमें सभी पोषक तत्व है या नही इसकी जानकारी होनी भी आवश्यक है।

छात्र हमारे देश का भविष्य है वही हमारे राष्ट्र के भावी कर्णधार है। शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को सही पोषण भी मिल सके इसलिए परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के स्वास्थ्य हेतु सरकारी स्तर पर कई योजनाएं और कार्यक्रम शामिल है। जिसके अन्तर्गत बच्चों का समय- समय पर स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है। मिड-डे-मील के अन्तर्गत गर्म एवं पका-पकाया भोजन परोसा जाता है। कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालयो में छात्राओं को निर्धारित मीनू के अनुसार पोषक तत्वों युक्त भोजन एवं नाश्ता दिया जाता है। मिड-डे-मील अथवा मध्यान्ह भोजन योजना स्कूली बच्चों के पोषण स्तर को बेहतर बनाने के लिये भारत सरकार की एक योजना है। इस योजना के तहत, बच्चों को पोषण मानको के मुताबिक भोजन दिया जाता है। कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के पोषण और उनके विकास को सुनिश्चित करने के लिये विशेष प्रयास है। इसके अन्तर्गत बच्चों को सुबह-शाम नाश्ता स्नैक एवं दोपहर का भोजन एवं रात्रि भोजन दिया जाता है। नियमित रूप से फल एवं दूध दिया जाता है। मिड-डे-मील योजना की शुरूआत भारत में 15 अगस्त 1995 को हुई थी तथा उत्तर प्रदेश इस योजना की शुरुआत 1 सितम्बर 2004 में हुई थी। इस योजना का उद्देश्य प्राथमिक स्कूलो के बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार करना और प्राथामिक शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाना है।

कूट शब्दावली का परिभाषीकरण :-

पोषण - शरीर द्वारा भोजन और अन्य पौष्टिक तत्वों को गृहण करना और उनका इस्तेमाल करना।

जागरूकता - किसी चीज के बारे में ज्ञान और समझ होना।

किसी भी मन, मनोदशा या लक्ष्य के लिए ध्यान और सचेतना।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय - केन्द्र सरकार द्वारा अगस्त 2004 में उच्च प्राथमिक स्तर पर आवासीय विद्यालयो की स्थापना के लिए इन विद्यालयो की शुरुआत की गई। जिसमें कक्षा 06 से कक्षा-08 तक की शिक्षा के लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक बालिकाओं का निशुल्क प्रवेश होता है।

शोध के उद्देश्य :-

- जनपद पीलीभीत में परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-7 में अध्ययनरत बालिकाओं की पोषणात्मक स्थिति का अध्ययन करना।
- जनपद पीलीभीत में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में कक्षा-7 में अध्ययनरत बालिकाओं की पोषणात्मक स्थिति का अध्यापन करना।
- जनपद पीलीभीत में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-07 में अध्ययनरत बालिकाओ की पोषणात्मक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- जनपद पीलीभीत में परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-7 की बालिकाओ का पोषक तत्वों के ज्ञान एवं जागरुकता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

जनपद पीलीभीत में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-7 में अध्ययनरत बालिकाओ की पोषणात्मक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का सीमांकन -

- यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद पीलीभीत के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओ की पोषणात्मक स्थिति तक ही सीमित है।
- यह शोध जनपद पीलीभीत के 08 विकास क्षेत्रों के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्राओं के चयन तक सीमित हैं।
- यह शोध केवल कक्षा-7 में पढ़ने वाली छात्राओं तक ही सीमित है।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

शोध प्रारूप :-

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के जनपद पीलीभीत के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं का चयन किया गया।

शोध विधि -

शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु जनपद पीलीभीत के 8 विकास क्षेत्रों के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत सम्भावित विधि द्वारा किया गया। इन्ही विद्यालयों में से 100-100 विद्यार्थियों का चयन क्रमबद्ध प्रति चयन विधि द्वारा किया गया।

क्र. सं.	विद्यालय	विद्यार्थियों की संख्या
1	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय	100
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय	100

शोध उपकरण –

शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण -

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-टेस्ट की गणना की गई।

परिकल्पना -

जनपद स्तर पर कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की पोषणात्मक स्थिति में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक – 01

क्र. सं.	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T-मान	परिमाण
1	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा -7 के विद्यार्थी	100	13.48	1.36	3.24	सार्थक अन्तर पाया गया।
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा -7 के विद्यार्थी	100	9.07			

उपरोक्त तालिका में दर्शाये गये विवरणानुसार कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय एवं गैर आवासीय परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 13.48 एवं 9.07 पाया गया। दोनों समूहों का सांख्यिकी गणनानुसार मानक विचलन 1.36 पाया गया एवं टी-मान 3.24 पाया गया जोकि D.F 198 के सार्थकता स्तर 0.05 पर 1.97 है जबकि t-मान 3.24 है अतः इसलिए t-मान की वेल्यू अधिक होने पर परिणामतः सार्थक अंतर पाया जाता है।

अतः प्राप्त आकड़ों के आधार पर तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। अतः प्रयुक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर की छात्राओं की पोषणात्मक स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है किं जो भी सार्थक अंतर पाया गया, उसका अंतर मुख्य कारण यह है कि यहाँ की छात्रायें छात्रावास में रहती है जिन्हें नियमित रूप से प्रतिदिन सुबह एवं शाम का नाश्ता एवं भोजन दिया जाता है। निर्धारित मीनू के अनुसार उन्हें पोषक तत्व युक्त भोजन दिया जाता है जिस कारण उनकी पोषणात्मक स्थिति भी अच्छी है एवं पोषण तत्वों के प्रति ज्ञान एवं जागरुकता भी है।

इसके विपरीत परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं की पोषणात्मक स्थिति एवं तत्वों की जागरूरता में कमी पाई गई क्योंकि उन्हें विद्यालय में उचित भोजन मिड-डे-मील में मिलता हे लेकिन अभिभावकों को गरीबी अथवा

आर्थिक स्थिति कमजोर होने या उपेक्षा के कारण बालिकाओं के स्वास्थय पर ध्यान नही दिया जाता है, बालिकाएं नियमित रूप से विद्यालय भी नही आती है उनके माता-पिता द्वारा मजदूरी या खेतों पर काम करने के कारण बालिकाओं पर अपने छोटे भाई-बहिनो की देखरेख एवं अन्य घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी दे दी जाती है। तथा लिंग भेद के कारण अभिभावकों द्वारा उनके स्वास्थ्य की उपेक्षा की जाती है।

इस कारण उनकी पोषणात्मक स्थिति एवं पोषक तत्वों के प्रति ज्ञान एवं जागरूकता में कमी पायी गई।

आभार :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ उत्तर प्रदेश की वित्तीय सहायता तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री दरवेश कुमार के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया है।

सुझाव :–

- शिक्षक द्वारा छात्राओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जायें एवं पोषक तत्वों की जानकारी दी जायें।
- शिक्षक को छात्राओं को यह बताया जायें कि बढ़ती उम्र के साथ किन-किन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है और कैसे हम सस्तें भोज्य पदार्थों से आवश्यक एवं पोषक तत्वों युक्त भोजन प्राप्त कर सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा बालिकाओं के अभिभावकों को भी जागरूक किया जायें किं वे लिंग भेद न करते हुए बालिकाओं के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें क्योंकि स्वस्थ रहने के लिये एवं बीमारियों से बचाव के लिये अच्छे पोषण की आवश्यकता होती है।
- बालिकाओं एवं उनके अभिभावकों को शिक्षक द्वारा प्रतिदिन विद्यालय आने के लियें प्रेरित किया जायें जिससे वो मिड-डे-मील का लाभ उठा सके और शिक्षा ग्रहण कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

संदर्भ सूची :-

- नवनीथन, पी., कलैवानी, टी., राजशेखरन, सी., और सुनील, एन. (2011)। ग्रामीण भारत में बच्चों की पोषण स्थिति: तमिलनाडु से एक केस अध्ययन, मध्याह्न भोजन योजना शुरू करने वाला दुनिया का पहला राज्य। स्वास्थ्य 3(10), 647.
- लोपेज़ डी कार्वाल्हो, आई., मैगलहेस कार्नेइरो, एम.एल., कार्वाल्हो रीस, टी., और डी पिन्हो, एल. (2014)। पब्लिक स्कूलों में छात्रों की पोषण स्थिति। रेव रेने,15(2).
- अस्मारे, बी., टैडडेल, एम., बेरिहुन, एस., और वैगन्यू, एफ. (2018)। उत्तर पश्चिमी इथियोपिया में प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के बीच पोषण की स्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ सहसंबंध। बीएमसी अनुसंधान नोट, 11, 1-6.

- बोमा, जॉर्ज ओ., इकिबा प्रॉस्पर एंथोनी, मुकोरो ड्यूक जॉर्ज, फिएटाइड एंड्रयू, एमडी डैनियल, टीआर तारिलान्यो, और के. मेफुबारा। "ग्रामीण परिवेश में बच्चों की पोषण संबंधी स्थिति।" आईओएसआर जे डेंट मेड साइंस 13, नं. 1 (2014): 41-7
- इदरीस, एम., जैन, एस., कुमारी, आर., सचान, बी., और सिंह, ए. (2012)। लखनऊ जिले में स्कूल जाने वाली किशोरियों की पोषण स्थिति। जर्नल ऑफ़ मेडिकल न्यूट्रिशन एंड न्यूट्रास्यूटिकल्स, 1(2), 101-101
- भारत के अर्ध-शहरी कस्बे में निजी और सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की पोषण स्थिति और आदतों का तुलनात्मक मूल्यांकन-कुंभकोणम शहरी ग्रामीण महामारी विज्ञान अध्ययन-KURES-1। पोषण और खाद्य विज्ञान जर्नल में वर्तमान अनुसंधान, 9(3), 928-933।
- अशोक, एन., कविता, एच., और कुलकर्णी, पी. (2014)। मैसूर शहर के सरकारी और निजी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के बीच पोषण स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन। स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 3(3), 164-164।
- दास, पी., बसु, एम., धर, जी., मलिक, एस., और पाल, आर. (2012)। भारत के पश्चिम बंगाल के उत्तरी कोलकाता में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की पोषण स्थिति और रुग्णता पैटर्न। साउथ ईस्ट एशिया जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ, 2(1), 13-17
- शशिकला, पी. (2016)। रोमपिचेरला मंडल आंध्र प्रदेश, भारत में सरकारी स्कूल के बच्चों में लड़कों और लड़कियों की पोषण स्थिति का आकलन। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 7(10), 140-144
- एसरॉन, ए. (2019, नवंबर)। चयनित कक्षा 8 के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पोषण की स्थिति और इसका प्रभाव। जर्नल ऑफ फिजिक्स में: कॉन्फ्रेंस सीरीज़ (वॉल्यूम 1254, नंबर 1, पृष्ठ 012013)। आईओपी प्रकाशन
- वर्मा, एम., शर्मा, पी., खन्ना, पी., श्रीवास्तव, आर., और साहू, एस.एस. (2021)। पंजाब, भारत में स्कूली बच्चों की पोषण स्थिति: स्कूल स्वास्थ्य सर्वेक्षण से निष्कर्ष। जर्नल ऑफ़ ट्रॉपिकल पीडियाट्रिक्स, 67(1),

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation